

# RAMAYAN

## रामायण



Patron  
Prof. Shri Prakash Mani Tripathi  
Honourable Vice Chancellor,  
Indira Gandhi National Tribal University,  
Amarkantak, M.P. (India)



Keynote speaker and Chief-guest  
Padma Vibhushan Jagadguru Swami Rambhadracharya  
Honourable Vice Chancellor,  
Handicapped University, Chitrakoot



Convener of the Seminar  
Prof. Abhishata Singh  
Professor and Dean  
Faculty of Humanities and Languages  
Indira Gandhi National Tribal University

## Social and Cultural Heritage of Ramayan - Concept Note

In the present global scenario, contemporary issues such as making the United Nations pressurise the neighbouring countries, implementing imperialistic policies and exercising the right of supremacy over others are a regular feature; in these circumstances, ongoing unrest prevails. Normalising these issues can be accomplished by following the path paved by Shri Ram. Since ancient times, Shri Ram has existed; moreover, he is timeless and unanimously acceptable. His sagas are not only ageless but also relevant. *Valmiki Ramayan* is the source of the socio-cultural and literary heritage to the world. It also enlightens human beings about high moral values, spiritual advancement, familial and social responsibilities, holistic education, war policy, statecraft, etc. In today's society, high materialism and unfavourable results often dissuade the students and make them depressed. In contrast, Shri Ram, whose coronation was due, happily renounced worldly pleasures and went into exile. His stories of struggles inspire and prepare us to face hardships of life fearlessly because nothing has been impossible for him. Shri Ram had set a moral belief in respecting diverse cultures. Shri Ram never imposed his cultural beliefs on anyone in Sri Lanka or elsewhere. There had been no single character in the saga of Ram who would have felt belittled. Even a commoner like Kevat had the privilege to argue with Shri Ram, but he paid respect to him with a smile. He is the one who had built self-esteem in people, injected self-respect into unconscious Ahilya, and appointed Angad as his representative to visit Sri Lanka, despite the enmity with his father. Since antiquity, the epic *Ramayan* and the character of Shri Ram have been guiding force for the entire humanity. The time has come to revive ancient Indian wisdom and follow the path of righteousness carved by great Indian sages and national heroes. The present seminar is focused on the above emergent sociocultural and literary issues to awaken our understanding and connect us with India's rich cultural heritage.

### रामायण की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत – विषयक अवधारणा

वर्तमान परिदृश्य में विश्व में चल रही गतिविधियाँ और सशक्त राष्ट्रों के द्वारा पड़ोसी देशों पर किये गए हमले, विस्तारवादी नीतियाँ एवं स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने की होड़ के बीच फैली अशांति को श्री राम के द्वारा बताये गए मार्ग से ही शांत किया जा सकता है। श्री राम सर्वकालिक, सर्वव्यापी और सर्वस्वीकार्य भी हैं, इसलिए उनकी कथा प्रासंगिक है। शिक्षा, राजनीति और राज्य संचालन की प्रेरणा रामायण से मिलती है। आज जब भौतिक उपभोग की वस्तु नहीं मिलने या फिर अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होने पर विद्यार्थी विषादग्रस्त होकर आत्महत्या कर लेते हैं, तब राम का जीवन आदर्श प्रतीत होता है। सांसारिक सुख और दुःख को सहजता से स्वीकार करने का आदर्श राम ने सिखाया है। राम न तो अपने राज्याभिषेक के लिए अतिउत्साहित थे और न ही चौदह वर्ष का वनवास मिलने पर व्यथित हुए। श्री राम ने सहजता और सरलता से जीवन का सुख और दुःख दोनों को समान भाव से स्वीकार किया। उनका सम्पूर्ण जीवन और संघर्ष समस्त मानवजाति के लिए प्रेरणादायी है।

संस्कृतियों का सम्मान करना भी श्री राम ने सिखाया है। किष्किंधा की संस्कृति के अनुसार उन्होंने बालि का वध किया क्योंकि उसने अपने अनुज की पत्नी का हरण किया था। श्री राम ने लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात भी अपनी संस्कृति और मान्यताओं को लंकावासियों पर आरोपित नहीं किया। श्रीराम की कथा में एक भी ऐसा पात्र नहीं है जिसने उनसे मिलकर स्वयं को छोटा समझा हो। केवट जैसा साधारण प्राणी भी उनसे बहस करता है और वे मुस्कुरा कर उसका भी सम्मान करते हैं। श्री राम लोगों में स्वाभिमान का संचार करते हैं और मर्यादित जीवन जीने की सीख देते हैं। वे जड़वत हो चुकी अहिल्या में भी स्वाभिमान जागृत करते हैं। राम एक ओर अंगद के पिता का वध करते हैं वहीं दूसरी ओर उसी अंगद को अपना प्रतिनिधि बना कर लंका भेजते हैं। प्राचीन काल से ही रामायण और राम भारतीय जनमानस का निरंतर मार्गदर्शन कर रहे हैं। वर्तमान समय की आवश्यकता यह है कि भारतीय जनमानस पुनः प्राचीन भारतीय ज्ञान और संस्कृति के प्रति अपनी चेतना जागृत कर उसका अनुसरण करे।

रामायण न केवल काव्य, महाकाव्य, नीतिशास्त्र, और धर्मशास्त्र का ग्रंथ है अपितु यह सम्पूर्ण मानव जीवन और समाज के प्रत्येक पक्ष से सम्बंधित नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की अनमोल धरोहर है। इसका प्रभाव भारतीय संस्कृति से परिचित जनमानस पर अत्यंत व्यापक और गहन है। यह रामराज्य का अनादर्श पर आदर्श, पाप पर पुण्य, अनीति पर नीति, अत्याचार पर सदाचार और आतंक पर शांति की जीत के साथ जीवन में नैतिक सत्य की स्थापना व कर्तव्यनिष्ठा को प्रतिस्थापित करते हुए सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय का मार्ग प्रशस्त करने वाला सर्वकालिक ग्रंथ है।

अतः आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में मानविकी एवं भाषा संकाय द्वारा अंग्रेज़ी, हिंदी, संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र विभागों के संयुक्त तत्वाधान में रामायण की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 एवं 16 जुलाई 2022 को किया जा रहा है।

The Seminar thus invites submissions on the themes which include but are not limited to :

- ▶ *Ramayan*: Basic of Global Cultural Relations and Human Understanding
- ▶ Contextualizing History and Culture in the *Ramayan*
- ▶ *Ramayan* through Ages
- ▶ Shri Ram: The Exiled Prince of the Oppressed and the Deprived
- ▶ Journey as Leitmotif in the *Ramayan* and the *Ramcharitmanas*
- ▶ Concept of Management and Leadership in the *Ramayan*
- ▶ Indian World View to *Ramayan*
- ▶ Shri Ram's journey from Humanity to Divinity
- ▶ Shri Ram as a National Hero of India
- ▶ *Ramayan* and Education, *Ramayan* and its Performance world-wide
- ▶ Relevance of Eco-criticism vis-à-vis *Ramayan*
- ▶ Sita as the First Feminist
- ▶ The Persona of Shri Ram
- ▶ *Ramayan* and the Contemporary Indian Ethos
- ▶ *Ramayan* and the Cult of *Bhakti*
- ▶ Ram and *Ramayan* in Folk Tradition and Popular Culture
- ▶ Journey as Metaphor of Transformation in the *Ramcharitmanas* and the *Ramayan*
- ▶ *Ramayan* Traditions and Versions in India and Abroad

उपर्युक्त विषय से संबंधित उपविषय निम्न हो सकते हैं-

- ▶ मानवीय सभ्यता का आदर्श – रामायण
- ▶ रामायण की वैश्विक संस्कृति और सभ्यता पर प्रभाव
- ▶ रामायण का मानव जीवन में महत्व
- ▶ जनजातीय साहित्य एवं रामायण
- ▶ लोकगीत और लोकसाहित्य में श्री राम और रामायण
- ▶ भारतीय संस्कृति के आदर्श श्री राम
- ▶ रामायण की विश्वव्यापकता
- ▶ वर्तमान संदर्भ में रामायण की प्रासंगिकता
- ▶ मानव के परिष्कार एवं उत्कर्ष का ग्रंथ-रामायण
- ▶ रामायण एवं जीवन प्रबंधन
- ▶ श्री रामचरितमानस में सामाजिक समरसता
- ▶ रामायण में धर्म दर्शन एवं संस्कृति के मूल तत्व
- ▶ रामायण एवं पर्यावरण
- ▶ रामायण : संपूर्ण मानवता की विरासत
- ▶ रामायण का पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

### Submission Guidelines :

1. Faculty members, research scholars, and independent scholars are kindly requested to submit their abstract of research paper (Max 300 Words) as a word document at [ramayanaconference2022@gmail.com](mailto:ramayanaconference2022@gmail.com)
2. Please mention your name in the word document's title and also in the subject line of the mail.
3. Certificate will be provided to all the participants and paper presenters.
4. Post Seminar Publication - The best shortlisted research papers will be published in reputed Journal.

### Important Dates :

Last Date of Abstract Submission	: 05 July 2022
Notification of Abstract Acceptance	: 06 July 2022
Last Date of Full Length Paper Submission	: 10 July 2022

### Registration Details:

1. All the presenters must register by paying the non-refundable participation fee (500 Rs. for research scholars & 1000 Rs. for Faculty Members and Independent Scholars).
2. People who are attending the offline Seminar can pay their registration fee on the spot and who would like to present in on-line mode can pay their registration fee by account transfer. The Bank details will be communicated along with the notification of selection of abstract.

Copy this link to your browser for registration :

<https://forms.gle/7CiqkppaxdMaBBbMA>